सेंट एंड्रयूज स्कॉट्स स्कूल

एडजेसेंट नवनीति अपार्टमेंटआई.पी.एक्सटेंशन,

पटपड़गंज दिल्ली ११००९२ सत्र: 2026-27

कक्षा:-8	**विषय: पाठ्यपुस्तक**	**पाठ:3 मज़बूत नींव**

मौखिक प्रश्न/ उत्तर (बोलकर)

(क) कलाम के पिता जैनुलआबदीन न तो बहुत उच्च शिक्षित थे और न ही धनी। परंतु वह बहुत बुद्धिमान और उदार मन वाले व्यक्ति था कलाम की माँ आशियम्मा एक विशिष्ट परिवार से थीं।

(ख) कलाम के मोहल्ले में हिंदू और मुस्लिम बड़े प्यार से, पड़ोसियों की तरह मिलजुल कर रहते थे।

(ग) जब कलाम सवाल करने लायक हुए तो उन्होंने अपने पिताजी से नमाज़ के बारे में और खुदा से संवाद बनाने में इसकी प्रासंगिकता के बारे में पूछा।

(घ) कलाम के पिता जटिल आध्यात्मिक बातों को भी इतनी सरल भाषा में समझाते थे कि छोटा बच्चा भी उन्हें अच्छी तरह समझ सकता था।

(लिखकर) लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर-

(क) कलाम के माता-पिता को आदर्श दंपत्ति का सम्मान इसलिए प्राप्त था क्योंकि वे दोनों उदार मन वाले इंसान थे।

(ख) कलाम के पिता जब नमाज पढ़कर बाहर आते थे तो मस्जिद के बाहर उनके इंतजार में बैठे लोग अपने पानी के कटोरे को उनके आगे कर देते थे। जिससे वह उनके पानी के कटोरे में अपनी उंगलियाँ डालकर दुआ पढ़ दें।

(ग) इंसान जब स्वयं को अकेला या हताश पाता है तो उसे किसी मददगार साथी की जरूरत होती है। कलाम के पिता अपनी नमाज़ व इबादत से लोगों की परेशानियों को दूर कर दिया करते थे।

(घ) जब व्यक्ति इस सच को समझ जाता है कि दिमागी शांति और खुशी हमें खुद के भीतर ही मिलती हैं न कि किसी बाहरी तरीके से।

(ङ) चक्रवाती तूफान में पामबान पुल उस समय ढह गया था, जब यात्रियों से भरी एक रेलगाड़ी उसके ऊपर से गुजर रही थी।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर- (कॉपी में केवल ख तथा घ करें)

(क) डॉ० अब्दुल कलाम के पिता ने कई दिन की मेहनत के बाद नाव बनाकर तैयार की थी और खुशी खुशी अपना कारोबार शुरू किया था। लेकिन कुछ समय बाद रामेश्वर तट पर एक भयंकर चक्रवात आया। तूफानी हवाओं में वह नाव टूट गई। पिताजी की प्रतिक्रिया यह थी कि उन्होंने बिल्कुल शांत भाव से अपना नुकसान बर्दाश्त कर लिया था। यह सोचकर की गई प्रतिक्रिया थी। ऐसा उन्होंने इसलिए किया क्योकि उस तूफान में पामबान पुल उस समय ढह गया था जब यात्रियों से भरी एक रेलगाड़ी उसके ऊपर से गुज़र रही थी। अतः वे अपनी नाव से ज्यादा इस त्रासदी को लेकर परेशान थे।

(ख) हमारे विचार से डर से की गई प्रार्थना और विश्वास से की गई प्रार्थना में पर्याप्त अंतर होता है। डॉ कलाम के पिता समझते थे कि जो लोग दिक्कतें सुलझाने के लिए नमाज, इबादत या मन्नतों का सहारा लेते हैं, उनका वह तरीका गलत है। क्योंकि इस तरह की प्रार्थना डर से पैदा होती है। और डर अक्सर व्यक्ति की उम्मीदों को पूरा होने से रोक देता है।

(ग) 'प्रारब्ध का अर्थ है- पूर्व जन्मों के कर्मों का वह भाग, जिसका फल हमें वर्तमान जीवन में भोगना पड़ता है।' इसे हम भाग्य या किस्मत भी कह सकते हैं। जब हम यह मानते हैं कि हमें तकलीफ़े शैतानी ताकतों के कारण मिल रही हैं तो हम उनसे घबरा जाते हैं और उन्हें हराने के लिए नमाज और इबादत आदि का सहारा लेते हैं। डॉक्टर कलाम के पिता मानते थे कि अपने भाग्य के विषय में विवेक पूर्ण सोच रखनी चाहिए तथा नमाज, इबादत

आदि प्रार्थना को शैतानी ताकतों से डरकर नहीं, बल्कि विश्वास के साथ करना चाहिए क्योंकि डर अकसर व्यक्ति की उम्मीदों को पूरा होने से रोक देता है।

(घ) हमारे विचार से यह बात एकदम सही है, क्योंकि शांति और खुशी का स्थान मन है। अतः जब हम अपने दिमाग को शांत रखते हैं और अपने भीतर खुशी का पाने का प्रयास करते हैं तभी हमें इनका अनुभव होता है। कभी भी बाहरी चीजों में शांति और खुशी को नहीं पाया जा सकता। हमारे विचार और मन की सोच में ही खुशी व शांति छिपी हुई हैं। अतः इन्हें किसी बाहरी तरीके से पाना संभव नहीं है।